❶

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स्तोतुर्मघवन् काममा दृण।।

ऋग्वेद 1/57/5

हे ऐश्वर्यशालिन् ! भक्त की कामनाओं को पूर्ण कर।

O the Bounteous Lord! fulfil all the good wishes and desirer of your devotees.

वर्ष 40, अंक 30 एक प्रति : 5 रुपये

सोमवार 22 मई, 2017 से रविवार 28 मई, 2017

विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853118

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8

फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com

इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

॥ ओ३म् ॥

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) के अवसर पर

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ : 3-4-5 जून, 2017

आओ हाथ बढ़ाएं वातावरण को स्वच्छ बनाएं

अधिक से अधिक स्थानों पर यज्ञ कराएं

आपको विदित ही है कि दिल्ली की आर्य संस्थाओं ने प्रत्येक वर्ष पर्यावरण दिवस को विशेष रूप से आयोजित करने का निर्णय लिया है। इसी क्रम में गत वर्ष 5 जून के दिन दिल्ली की अनेक आर्य समाजों ने 2 से लेकर 43 यज्ञ तक सम्पन्न करवाए थे। सार्वजनिक स्थानों पर किये गये यज्ञों में बैनर लगाकर तथा यज्ञ से सम्बन्धित पत्रक बंटवाकर आम व्यक्ति को यज्ञ के महत्त्व के विषय में बताया गया था। इसी प्रकार इस वर्ष भी इस कार्य के लिए अन्तरंग सभा ने तीन दिन के समय का निर्धारण किया है। इस वर्ष हम और अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुंच सकें इसलिए **3, 4 और 5 जून, 2017** का समय निर्धारित किया गया है। हम तीनों दिन अपने-अपने क्षेत्र में पर्यावरण संरक्षण यज्ञ करवाएं तथा वहां पर उपस्थित महानुभावों तक, बैनर तथा पत्रकों के माध्यम से अधिकाधिक महानुभावों तक यज्ञ की उपयोगिता पहुंच सके। इस हेतु सभा ने स्पॉन्सर बैनर तथा पत्रक बनवाए हैं, सब समाजों को जो अपने क्षेत्र में यज्ञ करवाना चाहें, नि:शुल्क दिये जाएंगे।

बैनर तथा पत्रक का मैटर सभा की वैवसाईट पर भी उपलब्ध रहेगा आप www.thearyasamaj.org से डाउन लोड करके भी अपनी आवश्यकता के अनुसार क्षेत्रीय सहयोगी महानुभाव का नाम नीचे प्रिन्ट करवा सकते हैं।

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ में जो महानुभाव सभा से स्पॉन्सर बैनर लेना चाहें वे समाज के लैटर पैड पर लिखकर दें कि आपकी आर्यमाज की कितने स्थानों पर यज्ञ करवाने की योजना है। उसी के अनुसार प्रत्येक यज्ञ के लिए 40 पत्रक एवं एक बैनर दिया जाएगा। यदि आप/आपकी आर्य समाज/संस्थान 5 से अधिक स्थान पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवा रहे हैं तो दो बैनर, 10 से अधिक यज्ञ हेतु 3 बैनर, 20 से अधिक यज्ञ हेतु 4 बैनर एवं 30 से अधिक यज्ञ हेतु 5 बैनर अधिकतम दिये जाएंगे। पत्रकों में नीचे खाली स्थान दिया गया है वहां आप अपने आर्य समाज की मोहर लगाकर (जिसमें फोन नं. आदि लिखा हो) वितरित करें।

यदि आपको इससे अधिक पत्रकों की आवश्यकता है तो आप सभा कार्यालय से 500/-रुपये सैंकड़ा की दर से खरीद सकते हैं। **पत्रक/बैनर** सभा में 28 मई से 2 जून दोपरह 12 बजे से रात्रि तक उपलब्ध होंगे। नि:शुल्क पत्रक एवं बैनर प्राप्त करने के लिए श्री सन्दीप आर्य जी 9650183339 से सम्पर्क करें।

आप जहां पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करवाएं वहां के फोटो व्हाट्सप्प नं. 9540045898 पर तुरन्त भेजें।

विशेष नोट : अपनी आर्य समाजों में यज्ञ कुण्ड एवं यज्ञ पात्रों के दो तीन सैट, यज्ञ पुस्तकें, हवन सामग्री, समिधा का पर्याप्त स्टाक रखें ताकि यदि कोई महानुभाव अपने यहां यज्ञ करवाना चाहें तो वह आप से सम्पर्क करके करवा सकें। लोकल वैलफेयर एसोसिएशन आदि से सम्पर्क करके वहां भी यज्ञ करवाने से काफी लाभ होता है। इस वर्ष बैनर में यज्ञ के लाभ का चार्ट भी दिया गया है- साथ ही पत्रक में लैबोरेट्री टैस्ट के परिणाम भी प्रकाशित किये गये हैं जो प्रचार की दृष्टि से विशेष उपयोगी होंगे। समाज के बाहर एक बोर्ड भी लगावें कि प्रत्येक अवसर पर यज्ञ करवाने की व्यवस्था है। सम्पर्क में अपने पुरोहित जी का नाम व मो. नं. भी अवश्य लिखें।

आप सबसे निवेदन है कि यज्ञ के प्रचार-प्रसार हेतु इस वर्ष अधिक से अधिक स्थानों पर पर्यावरण शुद्धि यज्ञ सम्पन्न करवाने की तैयारी करें तथा उन स्थानों की सूची सभा को भेजें ताकि उसके अनुरूप साधन/पत्रक आदि प्रकाशित करवाए जा सकें।

– **विनय आर्य,**
महामन्त्री, मो0 : 9958174441

ये लड़ाई धर्म निरपेक्ष नहीं है.....

लम्बे समय से चले आ रहे कश्मीर के जिस संघर्ष को लोग कश्मीर की आजादी से जोड़कर दुष्प्रचार कर रहे थे हिज्बुल मुजाहिदीन कमाण्डर जाकिर मूसा की ऑडियो क्लिप शायद उन लोगों को मुंह छिपाने को मजबूर कर दिया दे। हाल ही में हिज्बुल कमांडर ने जिस तरह अपने पांच मिनट के ऑडियो क्लिप में हुर्रियत के नेताओं को धमकी देते हुए चेताया है कि ''अगर हुर्रियत नेताओं ने चरमपंथियों की इस्लाम के खातिर लड़ी जा रही लड़ाई में रोड़े अटकाने की कोशिश की तो उनके सिर लाल चौक में कलम कर दिए जाएं।'' यह लड़ाई हम इस्लाम के लिए लड़ रहे हैं। अगर हुर्रियत नेताओं को ऐसा नहीं लग रहा है, तो हम बचपन से क्यों सुनते आए हैं- कि आजादी का मतलब क्या, ला इलाही इल्लल्लाह।

जाकिर मूसा के बयान के बाद इसे बिल्कुल ऐसी ही लड़ाई कह सकते हैं जैसे लादेन लड़ रहा था या बगदादी या अनेकों इस्लामिक चरमपंथी संगठन इस्लाम के लिए लड़ रहे हैं। बस फर्क इतना है उनका स्तर बहुत बड़ा है और इनका अभी कुछ छोटा बाकी मानसिकता समान कही जा सकती है। जिस तरह इस ऑडियो में जाकिर मूसा ने कहा है कि ''अगर कश्मीर की लड़ाई धार्मिक नहीं है तो फिर इतने समय से हुर्रियत नेता मस्जिदों

– शेष पृष्ठ 5 पर

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत देश भर से पधारे आदिवासी कार्यकर्त्ताओं के

36वें वैचारिक क्रान्ति शिविर का समापन समारोह

28 मई : मावलंकर हॉल, कॉस्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली : प्रात: 10 बजे से

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पधारकर कार्यकर्त्ताओं को अपना आशीर्वाद एवं सहयोग प्रदान करें

निवेदक

महाशय धर्मपाल	धर्मपाल गुप्ता	ईश्वर रानी मेहता	जोगेन्द्र खट्टर	योगेश आर्य	आचार्य दयासागर
प्रधान	उप प्रधान	उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष	शिविर संयोजक

वेद-स्वाध्याय

पृथिवी-धारक

सत्यं बृहदृतमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति।
सा नो भूतस्य भव्यस्य पत्न्युरुं लोकं पृथिवी नः कृणोतु।। - अथर्व. 12/1/1
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **भूमिः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - **बृहत् सत्यम्**= महान् सत्य! **उग्रं ऋतम्**= कठोर सत्याचरण **दीक्षा** = व्रतग्रहण **तपः** = कष्टसहन **ब्रह्म** = अनुभव-ज्ञान **यज्ञः** = निःस्वार्थ कर्म-ये छह गुण **पृथिवीं धारयन्ति**=पृथिवी को धारण कर रहे हैं। **भूतस्य भव्यस्य पत्नी**= भूत और भव्य की रक्षा करने वाली **सा नः पृथिवी** = वह हमारी **मातृभूमि नः** = हमारे लिए **उरुं लोकम्**=विस्तृत लोक को, विशाल क्षेत्र को **कृणोतु**= करे।

विनय - हे प्रभो! जिस भूमि पर हम रहते हैं वह भूमि हमें उन्नत करे, हमें विशाल बनाये। हम इसे धारण करने का पूरा यत्न कर रहे हैं। जब कभी हम मोहवश यह समझ लेते हैं कि कूटनीति अर्थात् झूठ, कपट, चालाकी आदि से अपने देश, राष्ट्र व मातृभूमि की धारणा होगी तब हम भूले होते हैं। पृथिवी को धारण करने वाले जो आवश्यक गुण हैं, उनमें तो सबसे पहला सत्य है। वह महान् सत्य, जिससे विश्व ब्रह्माण्ड स्थित है, हमारी भूमि को भी वही धारण किये हुए है और केवल सत्य का ज्ञान ही नहीं, किन्तु उसका आचरण राष्ट्र को स्थिर रखता है। हमें कठोरता के साथ, तेजस्विता के साथ, पूरा-पूरा सत्याचरण करना चाहिए। हममें जितना सत्य होगा, जितनी उग्र सत्यचर्या होगी, जितना हम दृढ़ संकल्प होकर ग्रहण किये व्रतों को निबाहने वाले होंगे, जितने हम राष्ट्र के लिए कष्ट सह सकेंगे, जितना हमें अनुभूत ज्ञान होगा और जितना हम निःस्वार्थ होकर परोपकार वृत्तिवाले होंगे; उतना ही यह हमारा देश अचलतया स्थित रहेगा। भूमि को कोई राजा, शासन या प्रजा नहीं धारण करते, किन्तु वहाँ के वासियों में स्थित ये छह गुण ही एकमात्र भूमि के धारण करने वाले होते हैं। यह जानकर इन गुणों को हम अपने में लाने का पूरा यत्न करते हुए ही यह प्रार्थना करते हैं कि हमारी प्यारी मातृभूमि हमें विस्तृत और विशाल बनाये। हम इन गुणों की साधना द्वारा अपनी मातृभूमि को धारण करें और यह भूमि हमारे भूत और भव्य की रक्षा करने वाली होकर हमें उन्नत करे। हम अपने भूत के आधार पर ही भविष्य में उन्नत हो सकते हैं और जितना ही हम अपने राष्ट्र के साथ एक होंगे, तादात्म्य करेंगे, उतना दूर तक हम अपने राष्ट्र के भूत में प्रविष्ट होंगे और उतना ही अपने भविष्य को उज्ज्वल और महान् बना सकेंगे। इस प्रकार मातृभूमि की हमारी उपासना हमें सुविशाल कर दे। राष्ट्र का व्यक्ति मातृभूमि के जीवन और मरण के साथ ही जीता या मरता है। मातृभूमि की अनन्यभाव से उपासना मनुष्य को कितनी विस्तृत आयु (जीवन) प्रदान कर देती है! तब मनुष्य क्षुद्र बातों से कितना ऊँचा हो जाता है! आओ, हम आज से उन सत्य आदि महान् (बृहत्) गुणों को अपने में धारण करते हुए अपनी मातृभूमि की सच्ची पूजा किया करें जिससे यह भगवती मातृभूमि हमारे भूत के दृढ़ चट्टान पर हमारे उज्ज्वल भव्य की रचना को सुरक्षित करती हुई हमारे लिए उतने विशाल क्षेत्र को खोल दे-उस भूत और भव्य को व्याप्त कर लेने वाले विस्तृत लोक को हमारा बना दे।

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

गारंटी दो, फिर बेटी बचाएंगे!

हरियाणा के रेवाड़ी में स्कूली छात्राओं के कई दिनों के अनशन के बाद समाचार पत्रों की खबर बनी कि ''रेवाड़ी की छोरियों ने सरकार को झुका दिया। राज्य के शिक्षा विभाग ने स्कूल के 'अपग्रेडशन' का नोटिस जारी कर दिया है जिसकी एक प्रति अनशन पर बैठीं छात्राओं को भी दी गई है।'' भले ही लोग इस घटना को छेड़छाड़ से पीड़ित छात्राओं की जीत के तौर पर देख रहे हों लेकिन सच यह है कि इस पूरे घटनाक्रम में वह अराजक तत्व, जीत गये जो हर रोज छेड़छाड़ की घटना को अंजाम देते थे और प्रशासन उनके आगे हार गया। गौरतलब है कि 10 मई को राज्य के रेवाड़ी के गोठड़ा टप्पा डहेना गांव की तकरीबन 80 स्कूली छात्राएं भूख हड़ताल पर बैठ गई थीं। उनकी मांग थी कि उनके गांव के सरकारी स्कूल को 10वीं कक्षा से बढ़ाकर 12वीं तक किया जाए। दरअसल गांव में स्कूल न होने के चलते इन लड़कियों को 3 किलोमीटर दूर दूसरे गांव के स्कूल में जाना पड़ता है, जहां रास्ते में आते-जाते अक्सर उन्हें छेड़छाड़ का सामना करना पड़ता है। इस वजह से वे गांव के स्कूल को 12वीं तक करने की मांग कर रही थीं। हरियाणा सरकार ने गांव के स्कूल को 12वीं तक करने की उनकी मांग मान ली जिसके बाद इन छात्राओं ने भूख हड़ताल वापस ले ली।

अभी पिछले दिनों हरियाणा प्रशासन ने लड़कियों और महिलाओं के साथ होने वाली छेड़छाड़ रोकने के लिए ऑपरेशन दुर्गा चलाया था। इसके बाद भी सोनीपत से एक युवती का अपहरण करके उसे रोहतक ले जाया गया और फिर उसके साथ सामूहिक बलात्कार, हत्या के बाद शव को बुरी तरह क्षत-विक्षत कर दिया गया था। दिल्ली के निर्भया कांड को दोहराती इस घटना ने अपराधियों के बढ़े हौसले दर्शाकर साथ ही देश में बेटियों की सुरक्षा के सवाल पर भी प्रश्नचिह्न लगा दिया है। जबकि हरियाणा ही वह राज्य है जहां से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरुआत की थी।

यह कोई पहली घटना नहीं है साल 2015 में बरेली से 45 किलोमीटर दूर एक दर्जन गांवों के लोग छेड़छाड़ की वजह से अपनी बेटियों को स्कूल भेजने से रोक लिया था। स्कूल जाने के लिए करीब 200 लड़कियों को नदी पार कर अपने स्कूल शेरगढ़ जाना पड़ता था। लेकिन नदी के उस पार पहुंचते ही गुंडे उनसे छेड़छाड़ करते थे। विरोध करने पर उनके साथ मारपीट की जाती थी। ठीक उसी तरह की घटना अब हरियाणा में हुई। धरने पर बैठी लड़कियां बताती हैं कि लड़के कभी चुन्नी खींच लेते हैं, कभी कुछ और। ये दुबकती हुई जाती हैं। वह बताती हैं ''लड़के पीछे से बाइक पर नकाब पहनकर आते हैं, चुन्नी खींचते हैं, रास्ते में प्याऊ के मटके रखे होते हैं, हमें देखकर उन्हें फोड़ते हैं और हमारे ऊपर पानी गिराते हैं। दीवारों पर मोबाइल नंबर लिखकर चले जाते हैं। हम मीडिया के आगे हर चीज तो बता नहीं सकते क्योंकि हर चीज की एक लिमिट होती है।''

हालांकि शिक्षा मंत्री ने गांव के स्कूल को बारहवीं तक अपग्रेड करवाने का वादा कर दिया है। लेकिन प्रदर्शनकारी इस पर लिखित में आश्वासन चाहती थीं। वह कहती हैं ''वादे तो हर साल होते हैं, एक भी पूरा नहीं हुआ। फिर भी लगा रखा है- बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ। क्या मतलब है इस नारे का। बंद कर देना चाहिए। क्यों यह मुहिम छेड़ रखी है? या फिर सुरक्षा की पूर्ण गारंटी दो इसके बाद लोग बेटी बचा भी लेंगे और पढ़ा भी लेंगे।

ऐसा नहीं है यह कोई दुर्लभ घटना है और साल दो साल में एक आध बार घट गयी, नहीं यह हर रोज की कहानी है। बस स्टैंड हो या निजी व सरकारी बसों तक में भी बेटियों की हिफाजत के लिए कड़े कदम उठाने की जरूरत है। यह भी कड़वा सच है कि पुलिस को ऐसे मामलों में लिखित में शिकायत देने से बच्चियां कतराती हैं और शायद कानूनी पचड़ों से बचने के लिए आम नागरिक भी कुछ नहीं करते लेकिन ऐसे मामलों में लड़कियों को सुरक्षित माहौल देने के लिए पुलिस के स्तर पर कड़ी कार्यवाही की जरूरत जरूर महसूस की जा रही है। लेकिन बावजूद इस तरह के अराजक तत्वों पर पुलिस कार्यवाही के बजाय बाहर ही समझौता करा दिया जाता है। इस वजह से भी पीड़िता कमजोर पड़ जाती है वरना देश की बच्चियां कभी भी पूरी तरह से कमजोर नहीं रहीं और अब तो वह अपने लिए और सुरक्षित जगह ढूंढ रही हैं।

सवाल और भी है कि आखिर यह बीमारी भारत में दिन पर दिन क्यों बढ़ रही है। आप हिन्दी फिल्म देखिये अमूमन हर एक फिल्म में नायक स्कूल जाती-ऑफिस जाती नायिका का रास्ता रोककर प्रेम निवेदन करता दिखाया जाता है। उसके कपड़े, उसकी चाल, उसकी नजर पर कमेन्ट करता है। तब सिनेमा घर में उपस्थित लोग तालियाँ और सीटियाँ बजाते आसानी से देखे जा सकते हैं जिनमें कुछ लोग इसे जायज कृत्य समझकर निजी जीवन में इसका प्रयोग करने से नहीं चूकते हैं। हरियाणा की ताजा घटना इसका सबसे बड़ा उदाहरण है।

इस घटना के बाद सोशल मीडिया पर एक महिला ने समाज की आंख खोलते हुए अपनी पोस्ट में लिखा कि हरियाणा में छेड़छाड़ से तंग आकर लड़कियों ने धरना प्रदर्शन किया और अपने ही गांव में स्कूल खुलवा लिया। धरना देने वाली लड़कियां दसवीं-बारहवीं तक की छात्रा थीं। मतलब लगभग 16-17 आयु वर्ग की? इस उम्र में पलायन वादी सोच? गम्भीर बात है। अराजक तत्वों का डटकर मुकाबला करना चाहिए। कल अगर इस स्कूल में कोई परेशानी हुई तो क्या पढ़ाई छोड़ देगी या स्कूल घर में खुलवा लेगी? घर में शोषण हुआ फिर? पलायनवादी सोच को त्याग कर संघर्षशील प्रवृत्ति को अपनाना होगा। आखिर सरकार भी चंद आपराधिक प्रवृति के लोगों के सामने कैसे झुक गयी?

गौरतलब है कि 2016 में रेवाड़ी जिले में ही स्कूल जाते समय एक छात्रा के साथ बलात्कार होने के बाद दो गांवों की लड़कियों ने डर के कारण स्कूल जाना छोड़ दिया था। मुद्दे की एक बात यह भी है कि महिलाओं के कपड़े, मोबाइल फोन और चाउमिन को रेप आदि के लिए जिम्मेदार बताने वाले नेता अगर समाज की मानसिकता को दोषी मान लें तो शायद स्थिति और बेहतर हो सके वरना दीवारों पर लिखे नारे बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ सिर्फ हास्य का प्रतीक बनकर रह जायेंगे।

- **सम्पादक**

महर्षि दयानन्द का आर्थिक चिन्तन

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

.....स्वामी दयानन्द ने यह अनुभव कर लिया था कि यह विदेशी शासन का ही परिणाम है कि स्वर्ण भूमि कहलाने वाला भारतवर्ष दरिद्रता; भूख, शोषण तथा विपन्नता का शिकार है। ..... उन्होंने देश के विगत वैभव का जो भव्य चित्र खींचा है वह अतीत को गौरवान्वित करने का प्रयास ही नहीं है, अपितु वे बतलाना चाहते हैं कि विदेशी पराधीनता ने इस देश को कितना लाचार तथायहां के निवासियों को दास मनोवृत्ति वाला बना दिया है। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे वे लिखते हैं-

पारस मणि पत्थर सुना जाता है, यह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सदा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (11वां समु.) भारत को आर्थिक दृष्टि से पुनः मजूत तथा सम्पन्न देखना उनका सुखद स्वप्न था। .....

वेद प्रतिपादित अर्थव्यवस्था का मनोनिवेशपूर्वक चिन्तन करने के पश्चात् उसकी व्यावहारिकता को जन सामान्य के समक्ष लाने का श्रेय भारतीय नवजागरण के पुरोधा स्वामी दयानन्द को है। उनका यह राष्ट्रीय चिन्तन उनकी राष्ट्रीय तथा राजनैतिक विचारधारा से ही सम्बद्ध था वे राजनीति और अर्थनीति में अविच्छिन्न सम्बन्ध मानते थे। यहां यह धातव्य है कि भारतीय वाड्मय में अर्थशास्त्र का प्रयोग व्यापक अर्थों में हुआ है। आचार्य विष्णुगुप्त चाणक्य ने अपनी दिव्य मेधा से अर्थशास्त्र नामक जिस ग्रन्थ की रचना की थी वह एक साथ ही राजनीति, कूटनीति, अर्थनीति, लोकप्रशासन, न्याय-व्यवस्था, दण्डनीति आदि के पक्षों को अपने भीतर समाविष्ट किये हुए है। इसी आर्ष दृष्टि को ध्यान में रखकर दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ग्रन्थों में सर्वत्र धर्म के साथ राजनीति (वे उसे राजधर्म कहते हैं) तथा अर्थनीति की भी विवेचना करते हैं।

स्वामी दयानन्द यद्यपि एक संन्यासी थे, जिनके लिए किसी प्रकार का सांसारिक अथवा लौकिक इति कर्त्तव्य शेष नहीं था। तथापि स्वदेश के लोगों की घोर दरिद्रता, कृषक वर्ग का भयंकर शोषण तथा मध्यम वर्ग के लोगों के अपार कष्टों को देखकर उन्होंने अनेक बार व्याकुलता दिखाई थी। जिस दयानन्द ने अपनी सहोदरा बहन की मृत्यु को देख कर एक बूंद आंसू नहीं गिराया वहीं गंगा तट पर उस विधवा को अपने मृत पुत्र के शव को बिना कफन नदी में प्रवाहित करते देख कर स्वनेत्रों से अजस्र अश्रुधारा प्रवाहित की थी। वह विपन्न भारत की अकिंचन विधवा अपने पुत्र की लाश को ढकने के लिए एक कफन भी नहीं जुटा सकी। उनके जीवन में अनेक ऐसे प्रसंग आये थे जब हमने देखा कि सांसारिक माया ममता से सर्वथा असंपृक्त यह निरीह, निस्संग तथा निःस्पद परिव्राजक देश की आर्थिक विपन्नता को देखकर तथा देशवासियों के सर्वविध पराभव तथा विनाश का अनुभव कर रो पड़ता था। वस्तुतः स्वामी दयानन्द ने यह अनुभव कर लिया था कि यह विदेशी शासन का ही परिणाम है कि स्वर्ण भूमि कहलाने वाला भारतवर्ष दरिद्रता; भूख, शोषण तथा विपन्नता का शिकार है।

उन्होंने देश के विगत वैभव का जो भव्य चित्र खींचा है वह अतीत को गौरवान्वित करने का प्रयास ही नहीं है, अपितु वे बतलाना चाहते हैं कि विदेशी पराधीनता ने इस देश को कितना लाचार तथा यहां के निवासियों को दास मनोवृत्ति वाला बना दिया है। अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश मे वे लिखते हैं-

पारस मणि पत्थर सुना जाता है, यह बात तो झूठी है परन्तु आर्यावर्त देश ही सदा पारसमणि है कि जिसको लोहे रूपी दरिद्र विदेशी छूते के साथ ही सुवर्ण अर्थात् धनाढ्य हो जाते हैं। (11वां समु.) भारत को आर्थिक दृष्टि से पुनः मजबूत तथा सम्पन्न देखना उनका सुखद स्वप्न था। उनकी एतद्विषयक कुछ योजनाएं थीं जिन्हें वे क्रियान्वित करना चाहते थे किन्तु असमय में ही जीवन रज्जु के टूट जाने के कारण वे इस दिशा में कुछ नहीं कर सके। प्रथम तो उन्होंने यह अनुभव किया था कि यूरोप में औद्योगीकरण की जो लहर आई है उससे भारत भी अवश्यमेव प्रभावित होगा। उनके काल में धीमी रफ्तार से ही सही इस देश में नये कल कारखाने स्थापित हो रहे थे। स्वामी जी की यह हार्दिक इच्छा थी कि भारत के कुछ युवकों को जर्मनी भेजा जाये, जहां रह कर वे पश्चिम के कला कौशल, नवउद्योग तथा नई तकनीक को सीखें तथा स्वदेश लौटकर यहां की आर्थिक उन्नति के ध्वज वाहक बनें। इसी विचार से उन्होंने जर्मनी के एक शिक्षा विद् तथा आर्थिक समस्याओं के विशेषज्ञ प्रो. जी. वीज से पत्राचार किया। उक्त प्रोफेसर ने उन्हें विश्वास दिलाया कि यदि स्वामीजी भारत से कुछ नौजवानों को पश्चिमी कलाकौशल सीखने के लिए वहां भेजेंगे तो उन्हें प्रशिक्षण दिलाने में वे सहायता करेंगे। स्वामी जी का 1883 में निधन हो गया और यह योजना आगे नहीं बढ़ सकी।

एक ओर स्वामीजी वाणिज्य व्यवसाय तथा कल-कारखानों के सर्वाविद्य विकास के पक्षधर थे तो दूसरी ओर वे कुटीर उद्योगों के द्वारा ग्रामीण अर्थ तंत्र को भी मजबूत बनाना चाहते थे। उन्होंने गौ हत्या को बंद कराने के लिए जो महा अभियान चलाया था उसके पीछे विशुद्ध आर्थिक दृष्टि ही थी, किसी प्रकार की सस्ती भावुकता या धार्मिक भावावेश नहीं था। गाय की ही भांति वे बैल, भैंस, बकरी आदि उन सभी पशुओं के रक्षण के हामी थे जो ग्रामीण उन्नति के आधार हैं। स्वामी जी ने कृषक वर्ग को प्रतिष्ठा दिलाई। उन्होंने लिखा है-यह बात ठीक है कि राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है। वे कृषि को भारत की आर्थिक समृद्धि का मुख्य आधार मानते थे। राजस्थान के उदयपुर, शाहपुरा तथा जोधपुर के शासकों को उपदेश देते हुए उन्होंने इस बात पर जोर दिया था कि अपनी प्रजा के हित को वे सर्वोपरि समझें तथा उस पर होने वाले अन्याय और अत्याचार को दूर करें। शाहपुराधीश राजा नाहरसिंह को तो अपने राज्य के किसानों को सिंचाई की सुविधाएं देने तथा कृषि को उन्नत बनाने के अनेक व्यावहारिक सुझाव भी दिये थे।

स्वदेश वस्तुओं के उपयोग पर जोर दो स्वामी जी की स्वराज्य साधना का एक प्रमुख बिन्दु था। वे अपने अनुयायियों को स्वदेशी तथा यहां पर बनी उपभोक्ता सामग्रियों को प्रयोग में लाने के लिए कहते थे। उन्हें इस बात से पीड़ा होती थी कि हमारे देश में बने जूतों को पहन कर सरकारी दफ्तरों में जाने की अनुमति नहीं है। जिस व्यक्ति के हृदय मे अपने देश में बने जूतों के लिए इतना मान-सम्मान हो कि वह उसका विदेशी जूतों के मुकाबले कचहरी या दफ्तर में न जाने देने के अपमान को सहन न करता हो, उसके हृदय में व्यापक स्वदेशी भावना की तीव्रता का अनुमान लगाना कठिन नहीं है। स्वामी जी वाणिज्य व्यवसाय में सच्चाई और ईमानदारी को सर्वोपरि मानते थे, यह उनके लघु ग्रन्थ व्यवहार भानु मे उल्लिखित बाजार और ग्राहक के दृष्टान्त से स्पष्ट है। आर्थिक समस्याओं को वे कितना महत्त्व देते थे यह इस तथ्य से भी स्पष्ट होता है कि संस्कृत वाक्य प्रबोध जैसी भाषा शिक्षण की पुस्तक में भी वे व्यापार व्यवसाय पर एक प्रकरण लिखना नहीं भूले।

बोध कथा

ओ३म् की महिमा

यम और नचिकेता की कथा तो आपने सुनी है। यम ने अपने घर में आये मेहमान से तीन वर माँगने के लिए कहा। नचिकेता ने दो वर माँग लिये। अपने लिए नहीं, अपितु दूसरों के लिए। यम ने कहा-''कुछ अपने लिए भी तो माँग!''

नचिकेता ने कहा-''मेरे लिए ही वर देना चाहते हो तो बताओ कि वह क्या है, जिसे ईश्वर कहते हैं?''

यम ने कहा-''यह न पूछ। कोई और वस्तु माँग ले। मैं तुझे बेअन्त धन और दौलत दे सकता हूं। सारी पृथिवी का राज दे सकता हूं। दीर्घायु दे सकता हूं। सुन्दर स्त्रियाँ दे सकता हूँ। भोग-विलास के सामान दे सकता हूं।''

आजकल का कोई नवयुवक होता तो शायद कहता-''ला, यही दे दे।'' परन्तु नचिकेता ने कहा-''नहीं, यह सब कुछ मुझे नहीं चाहिए, यह सब-कुछ नाश होने वाला है। मुझे वह दे, जो कभी नाश नहीं होता। अन्त में मरना है मुझे। मरने के पश्चात् तेरे पंजों में न फँसूँ, वह मार्ग बता मुझे।''

जब वह किसी भी उपाय से नचिकेता को नहीं मना सका, जब किसी भी रीति से उसका हठ दूर नहीं कर सका, तो बोला :

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाꣳसि सर्वाणि च यद्वदन्ति।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेणब्रवीम्योमित्येतत्।।

''सब वेद जिस महान् पद का वर्णन करते हं, सब तपस्वी जिसकी बात कहते है।, जिसकी इच्छा से ब्रह्मचारी अपना व्रत को धारण करते हैं, उसे संक्षेप में तेरे सामने कहता हूँ -ओ३म् है वह।''

आगे चलकर फिर उसने कहा-

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म ह्योतद् ध्येवाक्षरं परम्।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत्।।

''वास्तव में यही वह अक्षर है, जो ब्रह्म है। निश्चित यप से यही अक्षर परम है। इसको जानकर जाननेवाला सब-कुछ पाता है, जिसकी वह इच्छा करता है।''

इससे भी आगे चलकर उसने कहा-

एतदालम्बनं श्रेष्ठं एतदालम्बनं परम्।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते।।

''इसका आसरा सबसे बड़ा है। इसका आसरा सबसे ऊपर है। इसका आसरा लेकर आसरा लेने वाला ब्रह्मलोक में आनन्द ओर महिमा प्राप्त करता है।''

बोध कथाएं : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद दिल्ली के तत्वावधान में

अन्तर्विद्यालयी एकांकी नाटक प्रतियोगिता सम्पन्न

आर्य विद्या परिषद दिल्ली द्वारा आयोजित एंकाकी नाटक प्रतियोगिता शुक्रवार 5 मई 2017 को श्री संजय कुमार जी की अध्यक्षता में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। एकांकी नाटक के विषय थे क्रमश: शिक्षा के प्रचार-प्रसार में आर्य समाज की भूमिका, कुरीतियों के उन्मूलन में आर्य समाज का योगदान, स्वतन्त्रता संग्राम में आर्य समाज का योगदान। बच्चों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से मन को मोहने वाली एवं ज्ञान वर्द्धक प्रस्तुतियां दीं। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती किरण तलवार, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती तृप्ता शर्मा एवं श्रीमती सुनीता बुग्गा उपस्थित रहीं।

निर्णायक मण्डल में श्री विजय भूषण जी, श्री आनन्द जी एवं श्रीमती डॉ. उमा शशि दुर्गा जी ने अपना निष्पक्ष निर्णय दिया। तीनों वर्गों में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार में विजेता टीमों को शील्ड प्रदान की गई। सभी प्रतियोगियों को सुन्दर प्रमाण पत्र एवं कॉमिक्स, वेदों को जाने, गागर में सागर, पुस्तकें प्रदान की गईं। इस अवसर पर श्री संजय कुमार जी ने कहा ''यह प्रतियोगिता न केवल बच्चों के लिए अपितु शिक्षकों के लिए भी ज्ञानवर्द्धक हैं। इससे अपनी संस्कृति एवं संस्कारों का परिचय मिलता है।'' श्री आनन्द जी ने कहा ''बच्चों ने बड़ी ही कुशलता से रंगमंचन किया, बाल विवाह एवं सती प्रथा का विरोध, विधवा विवाह एवं स्त्री शिक्षा का समर्थन बड़े ही सुन्दर ढंग से दिखाया गया। आर्य समाज के कारण ही स्त्री शिक्षा का प्रचार-प्रसार हुआ।'' उन्होंने यह भी कहा कि ''एकांकी नाटक का अर्थ है 'एक अंक वाला' बच्चों को यह ध्यान रखना चाहिए कि एकांकी नाटक में मंच कभी खाली न रहे।''

प्रतियोगिता के निर्णायक श्री विजय भूषण, आचार्य आनन्द, डॉ. उमा शशि दुर्गा एवं श्रीमती संगीता बुग्गा अपना निर्णय सुनाते हुए। साथ में हैं विद्यालय प्रबन्धक संजय कुमार, प्रधानाचार्या किरण तलवार, तृप्ता शर्मा एवं वीणा आर्या।

विजय भूषण जी ने कहा ''एकांकी में संगीत भी हल्का-फुल्का हो तो और भी आनन्द आ जाता है।'' उन्होंने अध्यापिकाओं का भी धन्यवाद किया जिन्होंने एकांकी तैयार करवाए।

श्रीमती उमा शशि दुर्गा जी ने कहा ''एकांकी बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किए गए।' कई बच्चों ने अल्पकाल में कपड़े बदलकर दुबारा अभिनय किया। कुछ बच्चों की प्रस्तुतियाँ दिल को छूने वाली थीं। 1857 की क्रांति से पूर्व भी महर्षि दयानन्द व स्वामी विरजानन्द जी, 'महारानी लक्ष्मीबाई व तांत्यातोपे' आदि के सम्पर्क में थे। इस प्रकार आज की प्रतियोगिता बहुत ही सराहनीय रही।'' अंत में श्रीमती किरण तलवार ने सबका धन्यवाद किया। – *संयोजक*

एकांकी नाटक प्रतियोगिता परिणाम

कक्षा 1 से 5 तक

1. आर्य पब्लिक स्कूल, राजा बाजार **(प्रथम)**
2. एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग **(द्वितीय)**
3. दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर **(तृतीय)**
4. रतनचन्द आर्य प.स्कूल, सरोजनी नगर **(सांत्वना)**

कक्षा 6 से 8 तक

1. रघुमल आर्य क.सी.सै. स्कूल, राजा बाजार **(प्रथम)**
2. दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर **(द्वितीय)**
3. एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग **(तृतीय)**
4. आर्य मॉडल स्कूल, आदर्श नगर **(सांत्वना)**

कक्षा 9 से 12 तक

1. रघुमल आर्य क.सी.सै. स्कूल, राजा बाजार **(प्रथम)**
2. एस.एम. आर्य प. स्कूल, पंजाबी बाग **(द्वितीय)**
3. दयानन्द आदर्श विद्यालय, तिलक नगर **(तृतीय)**
4. बिडला आर्य क.सी.सै. स्कूल, कमला नगर **(सांत्वना)**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के आर्य विद्यालयों का वार्षिकोत्सव

आधुनिक भारत – ले चलें शिखर की ओर : 22 जुलाई, 2017 : तालकटोरा स्टेडियम, नई दिल्ली

समस्त विद्यालय विद्यार्थियों के परिवारों सहित अवश्य पहुंचे – सुरेन्द्र कुमार रैली, प्रस्तौता

देवराज सुरेश रानी आर्य धर्मशाला एवं आर्यसमाज मन्दिर उत्तम नगर का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा टी -155, शुक्र बाजार, बिन्दापुर, उत्तम नगर में संचालित एवं व्यवस्थापित देवराज सुरेशरानी आर्य धर्मशाला एवं आर्यसमाज मन्दिर का वार्षिकोत्सव समारोह दिनांक 2 मई, 2017 को प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी भव्यता से आयोजित किया गया। इस बार इसकी विशेषता यह थी कि यज्ञ का जो शुभारम्भ प्रात:काल हुआ था, वह निरन्तर रात्रि 8 बजे तक चलता रहा। आर्यजन

आते रहे यजमान और यज्ञ ब्रह्मा बनते रहे।

वार्षिकोत्सव समारोह में उत्तम नगर एवं आस-पास के क्षेत्रों की समस्त आर्यसमाजों के साथ-साथ स्थानीय जनता ने समारोह में उत्साह के साथ भागीदारी की। संयोजक श्री सतीश चड्ढा जी ने बताया कि आर्यसमाज एवं धर्मशाला का भवन काफी पुराना हो गया है, जिसे पुनर्निर्माण की आवश्यकता है। सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने इसके भवन निर्माण के लिए भरपूर सहयोग देने का आश्वासन दिया। आर्यसमाज के प्रधान श्री रामेश्वर दयाल जी ने समस्त आर्य महानुभावों एवं सभा अधिकारियों के पधारने के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से उपस्थित समस्त महानुभावों के लिए प्रात:काल एवं सायंकालीन जलपान तथा दोहपर के भोजन की सुन्दर समुचित व्यवस्था की गई थी।

– *मन्त्री*

प्रथम पृष्ठ का शेष

को कश्मीर की लड़ाई के लिए इस्तेमाल क्यों करते आ रहे हैं। फिर चरमपंथियों के जनाजों में वह क्यों जाते हैं। ये लड़ाई ''इस्लामी हुकूमत'' के लिए लड़ी जा रही है।''

शायद अब वामपंथी नेता कविता कृष्णन्न और वह मानवाधिकार आयोग के विश्लेषक जो अभी पिछले दिनों कश्मीर में इन्टरनेट बंद होने के कारण संयुक्त राष्ट्र में आंसू बहाकर इन्टरनेट को बंद करना भी मानवाधिकार पर हमला बता रहे थे वह इस ऑडियो को कई बार सुनें और जवाब दें कि मात्र कुछ लोगों के मजहबी जूनून के कारण भारत अपने लोकतंत्र को मजहबी मानसिकता की आग की भट्टी में भला क्यों झोंक दें? आखिर भारत अपने लोकतंत्र की रक्षा अपने हितों का रख-रखाव क्यों न करें? दूसरी बात आज कश्मीरी कौन सी आजादी की बात कर रहे हैं? वह कट्टर मजहबी आजादी जिसने सीरिया, यमन, अफगानिस्तान, इराक आदि देश तबाह कर डाले? मूसा ने अलगावादी नेताओं के मुंह पर सही तमाचा लगाया कि यह धर्मनिपेक्ष की लड़ाई नहीं है।

सब जानते हैं कि यह सिर्फ मजहबी उन्माद है वरना वहां से सिख, बौद्ध, हिन्दू और ईसाई आदि समुदाय से तो आजादी की कोई आवाज नहीं आती, क्यों? बुरहान वानी की मौत के बाद अचानक उपजी हिंसा के बाद जब पत्थरबाजी का दौर चला उसकी बखिया उधेड़ते हुए तब भारत के एक प्रसिद्ध न्यूज चैनल ने वहां की हिंसा का मुख्य कारण यही बताया था जो आज जाकिर मूसा बता रहा है। कि आखिर किस तरह वहां कदम-कदम पर खड़ी की गयी मस्जिदें और मदरसों को संचालित करने वाले लोग इस हिंसा में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। लेखक विचारक तुफैल अहमद इस पर बड़ी बेबाकी से अपनी राय रखते हुए कहते हैं कि कुरान में ऐसी बहुत सी आयतें हैं जिनका अर्थ अलग-अलग समझाया जाता रहा है जैसे आयत 9:14 कहती है- ''उनके खिलाफ लड़ो, तुम्हारे हाथों से अल्लाह उन्हें तबाह कर देगा और लज्जित करेगा, उनके खिलाफ तुम्हारी मदद करेगा और मुसलमानों की छातियों पर मरहम लगाएगा।'' कुछ लेखक आयत 2: 256 का भी हवाला देते हैं जो कहती है- ''धर्म में कोई मजबूरी नहीं है।'' तुफैल आगे लिखते है कि जिहादी तर्क देते हैं कि यह आयत गैर मुसलमानों पर लागू होती है जिन्हें शरिया शासन के तहत रहना चाहिए। पाकिस्तान में रहने वाले एक बर्मी चरमपंथी मुफ्ती अबुजार अजाम का स्पष्टीकरण है कि इस आयत के अनुसार, किसी भी ईसाई, यहूदी या गैर मुसमलान को इस्लाम कबूल करने के लिए मजबूर नहीं किया जा सकता, लेकिन उसकी दलील है कि जब मुसलमान जंग के लिए आगे बढ़ें तो उन्हें सबसे पहले दावा करना (यानी गैर मुसलमानों को इस्लाम में आने का न्यौता देना) चाहिए, अगर वे इसे कबूल नहीं करते हैं तो फिर लड़ाई शुरू होनी चाहिए। हालांकि सब कश्मीरी इन लोगों के इस बहकावे में नहीं आते इनके बाद वहां बड़ा हिस्सा भारत को अपना देश मानता है और आजादी को मात्र एक राजनीतिक ढकोसला। इसका सबसे बड़ा उदाहरण यह है कि अगर वहां आजादी के नाम पर बुरहान वानी जैसे आतंकी जन्म लेते है तो हमें गर्व है कि वहां उमर फय्याज जैसे राष्ट्रभक्त भी जन्म लेते हैं।

असल में कश्मीर में कोई समस्या नहीं है वहां समस्या इस्लाम के नाम पर पैदा की जाती रही है। चाहे इसमें 90 के दशक का पंडित भगाओ आन्दोलन रहा हो या आतंकी बुरहान वानी की मौत के बाद उपजा पत्थरबाजी का दौर। मुख्य रूप से इसके हमेशा से तीन कारक उत्तरदायी हैं। कश्मीर के बारे में पाकिस्तान का जुनून, जम्मू कश्मीर सरकार का बहुत ज्यादा राजनीतिक कुप्रबंधन और राज्य में कट्टरपंथी इस्लामिक विचारधारा का उदय। शायद यह तीनों समस्या कहीं ना कहीं एक साथ मूसा के बयान से जुडी नजर भी आती है।

पाकिस्तान कश्मीर भूभाग पर इस्लाम की आड़ लेकर भारत को लगातार चुनौती देता आया है। भारत को बांटने और कश्मीर पर कब्जा करने के उसके रणनीतिक मकसद ने भारत के खिलाफ आतंकवाद को समर्थन देने की उसकी नीति को जन्म दिया है। अत: इस बात को नाकारा नहीं जा सकता कि कश्मीर मामले की जड़े कट्टरपंथी इस्लाम में भी हैं। आज कश्मीरी नौजवानों के बीच 'आजादी' का नारा लोकप्रिय होकर उन्हें बड़ी संख्या में संगठित कर रहा है। आतंकवादियों और अलगाववादियों द्वारा सोशल मीडिया के दुरुपयोग ने लोगों को ज्यादा उग्र बनाया है, जिससे भारत के समक्ष बड़ी चुनौतियां उत्पन्न हुई हैं। लेकिन इस सबके बावजूद भी इसे अच्छी खबर समझा जाए कि जिस लड़ाई को वर्षों से राजनेता और मीडिया आजादी की लड़ाई बता रही थी जाकिर मूसा ने एक पल में चरमपंथ का एजेंडा सामने रखकर सबके दावे खोखले कर दिए कि कश्मीर की लड़ाई धर्मनिपेक्ष नहीं है। -*राजीव चौधरी*

सार्वदेशिक सभा के निर्देशन में दिल्ली सभा द्वारा

18वां वैवाहिक परिचय सम्मेलन : 9 जुलाई, 2017

हम सब मिलकर आर्यसमाज के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प है। इसी निमित्त हम अनेक कार्यों का सम्पादन अपने-अपने आर्य समाजों के माध्यम से निरन्तर कर रहे हैं। आर्यसमाज की विचारधारा व्यक्ति की नहीं परिवार की विचारधारा है। जब तक आर्यसमाज परिवार के साथ नहीं जुड़ेगा तब तक हम सशक्त नहीं हो सकते। इसी क्रम में आवश्यक प्रतीत हुआ कि हमें अधिक से अधिक आर्य परिवारों के निर्माण की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए। आर्य परिवारों के सामने एक ऐसे मंच का अभाव सा है जहां वे अपने गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार अच्छे वर-वधू का चयन कर सकें। जाति के आधार पर बने अनेक संगठन तो इस कार्य को कर रहे हैं किन्तु वैदिक विचारधारा वाले महानुभाव जिनमे कोई भी जाति का आधार न हो, उनके लिए ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी। इस हेतु सभा ने गत 7 वर्ष पूर्व आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलनों के कार्य को आरम्भ किया था। तब से इसकी उपयोगिता के चलते ये निरन्तर चलता चला आ रहा है। इस वर्ष सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में **18वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन** रविवार दिनांक **9 जुलाई 2017** को प्रात: 10 बजे से **आर्यसमाज बाहरी रिंग रोड विकास पुरी, नई दिल्ली**-110018 में आयोजित किया जाएगा।

आर्यजन अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ '**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**' के नाम 300/- रुपये का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न करके भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **एक्सिज बैंक** खाता संख्या **910010001816166** करोल बाग शाखा में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे।

आर्यजनों/पाठकों एवं आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों/सदस्यों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संगों में बार-बार इसकी सूचना देवें तथा प्रकाशित फार्म की प्रतियां करके आर्यसमाज में रखवा लेवें, मांगने पर अपने सदस्य को दें और नोटिस बोर्ड पर लगाकर, सदस्यों को यह भी निवेदन करें कि वे अपने सम्पर्क के परिवारों को इसमें भाग लेने के लिए प्रेरित करें। सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

Veda Prarthana

Dear God, May Our Soul Always Listen to Your Inspirations

- Acharya Gyaneshwarya

अग्न आ याहि वीतये गृणानो
हव्यदातये।
नि होता सत्सि बर्हिषि।।
Agna a yahi vitaye grnano havya dataye.
Ni hota satsi barhishi.
(sam Veda 1:1)

Agna - Our Ultimate Leader, You enlighten the whole universe, **a yahi -** please come to us, become easily accessible, **vitaye**- to give us wisdom and to remove our sorrows, **grnano** - teach and inspire us with the virtuous path in life, **havya dataye** - help us acquire things we are praying for our welfare and enjoyment. H**ota** - You are the fulfiller of desires when our conduct is virtuous in our life's journey (yajna), **ni satsi -** be constantly available to us with certainty, barhishi in our hearts and in our souls.

Dear God, You are *Agna* the Ultimate Leader and Ultimate Light who enlightens us and always guide us in the right and virtuous direction. You are the Creator, Protector, Sustainer, Nurturer and Administrator of the universe. You have no physical form yet You are Omniscient and Omnipresent existing inside everything in the universe including our soul. Whether we ignorant human beings know it or not, accept or acknowledge You or not, thank You or meditate on You or not in our life, You are always there as our Friend and Guide. When we encounter obstacles, deficiencies, unhappines or miseries in our life's journey, whether or not we ask You to give us wisdom, courage, strength and encouragement to help us to deal with our problems, You on Your own, since the beginning of time residing inside our heart and soul as the inner voice have always tried to guide us (even though we often do not listen to Your voice) in the right direction and will continue to do so in the future.

O Supreme Lord! You exit everywhere including inside our body and soul even though we ignorant human beings do not recognize or perceive your presence inside our mind, intellect, senses and body. Most of the time in our daily life we have for gotten you. We often delude ourselves by believing that if we go through the ritual of praying to You for half an hour or so daily, we have made a connection with You even though during rest of the day while performing our daily activities we have forgotten You and lost connection with Your virtuous teachings. The result of this forgetfulnes is that we often follow wrong path in life in thoughts, words and actions whereby we not only end up being uncontented and unhappy but also misdirect our family, community and nation in the wrong direction. Therefore, **Dear Lord it is our sincere prayer that we may be constantly aware of You in our soul and mind, recognize You as our closest Companion and Friend and by following Your virtuous path in life gradually get close to and attain Your realization.**

Dear God, You are the Giver of all true knowledge of spiritual and material (physical) sciences as well as claarify for us the hidden secrets of the universe. When we are able to learn in depth these great sciences, we will be able to suppress and overcome our sinful tendencies and gradually become capable of uprooting our desires and actions that result in lust, anger, greed and blind attraction (***moh***) to others.

O Master of all true knowledge! You are the Ultimate Teacher (Teacher of all teachers), teach and help us to make our soul, mind and intellect be constantly aware of You; teach us the right path to follow in life as the regular teachers teach their pupils. Once we learn true knowledge directly from You and start adopting it in our lives, we will become blissful and full of joy as well as obtain physical things necessary for living.

Dear God, our only prayer to You is that we be always consciously aware of Your presence in our hearts (souls) and constantly listen to Your inspiration to follow the right path and refrain from that which is wrong. May we always be able to distinguish what is right vs. wrong; moral vs. immoral; reaponsible vs. irresponsible; beneficial vs. unbeneficial; helpful vs. hurtful to others; essential and important vs. superficial and unimportant. If in our soul and mind we are constantly aware of You, then there is no doubt that we will spare ourselves from wrong thoughts and deeds and direct ourselves towards Your virtuous path leading to bliss in our lives.

(For God's attributes, also see mantras # 2, 5, 8, 10, 20,28,30,31)

To be continued

आओ ! संस्कृत सीखें

संस्कृत पाठ - 24 (अ)

गतांक से आगे....

अव्यय पदानि (indeclinables)

परश्वः day after tomorrow परसों
परितः all around चारों ओर
पर्याप्तम् enough आवश्यकतानुरुप
पश्चात् afterwards बाद/पीछे
पुनः again दुबारा
पुरतः in front of सामने
पृथक् severally, apart from अलग
प्रति towards ओर / तरफ
प्रतिदिनम् daily नित्य
प्राक् before पहले
प्रातः morning सुबह
बलात् forcibly बलपूर्वक
बहिः outside बाहर
भूयः again दुबारा/ फिर से
मा do not निषेध
यत् since जो/कि
यतः from were जहाँ से
यत्र were जहाँ
यथा as जैसे
तथा like वैसे
यदा when जब
यद्यपि even if फिर भी
यावत् so much sp जब तक
वा or या
विना without बिना
विशेषतः specially विशेष रुप से
शनैः slowly धीरे
शीघ्रम quickly शीघ्र
श्वः tomorrow आने वाला कल
सततम् always निरन्तर
सदा always हमेशा
सत्यं really सच
समीपम्, समीपे near पास
समीचीनम् well, right सही/ठीक
सम्यक् well, right सही
सर्वतः on all sides सब ओर
सर्वत्र everywere सब जगह
सर्वदा always हमेशा/सब दिन
सह alongwith साथ
सहितम् alongwith साथ
साक्षात् in person सम्मुख
सामान्यतः generally सामान्य रुप से
सायम् evening शाम
स्वयम् oneself स्वयं
हि indeed निश्चय
ह्यः yesterday बीता कल

- *क्रमशः* -

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय

प्रेरक प्रसंग

श्रद्धा सजीव होकर झूमती थी

आर्य समाज के आदि काल में आर्यो के सामने एक समस्या थी। अच्छा गानेवाले भजनीक कहाँ से लाएँ। इसी के साथ जुड़ी दूसरी समस्या सैद्धान्तिक भजनों की थी। वैदिक मन्तव्यों के अनुसार भजनों की रचना तो भक्त अमींचन्दजी, चौधरी नवलसिंहजी, मुंशी केवलकृष्णजी, वीरवर चिरंजीलाल और महाशय लाभचन्दजी ने पूरी कर दी, परन्तु प्रत्येक समाज का साप्ताहिक सत्संग में भजन गाने के लिए अच्छे गायक की आवश्यकता होती थी। नगरकीर्तन आर्यसमाज के प्रचार का अनिवार्य अंग होता था। उत्सव पर नगर कीर्तन करते हुए आर्यलोग बड़ी श्रद्धा व वीरता से धर्मप्रचार किया करते थे।

पंजाब में यह कमी और भी अधिक अखरती थी। इसका एक कारण था। गुरुद्वारों में गुरु ग्रन्थसाहब से भजन गाये जाते हैं। ये भजन तबला बजाने वाले रबाबी गाते थे। रबाबी मुसलमान ही हुआ करते थे। मुसलमान रहते हुए ही वे परम्परा से यही कार्य करते चले आ रहे थे। यह उनकी आजीविका का साधन था।

आर्यसमाज के लोगों को यह ढंग न जँचा। कुछ समाजों ने मुसलमान रबाबी रखे भी थे। फिर भी आर्यों का यह कहना था कि मिरासी या रबाबियों के निजी जीवन का पता लगने पर श्रोताओं पर उनका कोई अच्छा प्रभाव नहीं पड़ेगा। सिखों की भाँति भजन लोग सुनना चाहते थे।

तब आर्यों ने भजन-मण्डलियाँ तैयार करनी आरम्भ कीं। प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी मण्डली होती थी। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब सिन्ध में सब प्रमुख समाजों ने भजन मण्डलियाँ बना लीं। महात्मा मुंशीराम वकील, न्यायाधीश केवल कृष्ण जी (मुंशी), महाशय शहजादानन्द जी लाहौर, चौधरी नवल सिंह जी जैसे प्रतिष्ठित आर्यपुरुष नगरकीर्तनों में आगे गाया करते थे। टोहना (हरियाणा) के समाज की मण्डली में हिसार जिले के ग्रामीण चौधरी जब जुड़कर दूरस्थ समाजों में जसवन्तसिंह वर्माजी के साथ गर्जना करते थे तो समाँ बँध जाता था।

लाहौर में महाशय शहजादानन्द जी को भजन मण्डली तैयार करने का कार्य सौंपा गया। वे रेलवे में एक ऊँचे पद पर आसीन थे। उन्हें रेलवे में नौकरी का समय तो विवशता में देना ही पड़ता था, उनका शेष सारा समय आर्यसमाज में ही व्यतीत होता था। नये-नये भजन तैयार करने की धुन लगी रहती। सब छोटे-बड़े कार्य आर्य लोग आप ही करते थे। समाज के उत्सव पर पैसे देकर अन्यों से कार्य करवाने की प्रवृत्ति न थी।

इसका अनूठा परिणाम निकला। आर्यों की श्रद्धा-भक्ति से खिंच-खिंच कर लोग आर्यसमाज में आने लगे। लाला सुन्दरदास भारत की सबसे बड़ी आर्य समाज (बच्छोवाली) के प्रधान थे। आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर जब कोई भजन गाने के लिए वेदी पर बैठता तो लाला सुन्दरदासजी स्वयं तबला बजाते थे। जो कार्य मिरासियों से लिया जाता था, उसी कार्य को जब ऐसे पूज्य पुरुष करने लग गये तो यह दृश्य देखकर अपने-बेगाने भाव-विभोर हो उठते थे।

ऐसा लगता था मानो श्रद्धा सजीव होकर झूम रही है।

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

आर्य समाज मन्दिर डेरावल नगर के वार्षिक उत्सव

महर्षि मनु की शिक्षाएं आज भी प्रासंगिक - डॉ. विवेक आर्य

महर्षि मनु विश्व के प्रथम संविधान ज्ञाता थे। जिन्होंने वेदोक्त शिक्षाओं से, योग्यतानुसार वर्ण व्यवस्था निर्धारित की। मध्य कालीन युग मे कुछ निहित स्वार्थी तत्वों ने उनके मौलिक ग्रंथ 'मनुस्मृति' में भ्रांत धारणाएं जोड़कर भारतीय संस्कृति को कलुषित, कलंकित करने का घातक षड्यंत्र रचा। समाज सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था का समर्थन किया। डॉ. राधाकृष्णन, रविन्द्र नाथ टैगोर, महात्मा गांधी, ब्रिटिश बुद्धिजीवी विलियम जोन ने स्वीकार किया कि मनुस्मृति के श्लोको में मिलावट है। ये उद्गार वैदिक विद्वान डॉ. विवेक आर्य ने आर्य समाज मन्दिर डेरावल नगर के वार्षिक उत्सव में आयोजित महर्षि मनु पर आयोजित विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते हुए कहे। उन्होंने आगे कहा-आर्य समाज वैचारिक, आंदोलन है, जो 'शुद्ध मनुस्मृति' के अनुसार सदाचार, नारी सम्मान व सबकी भलाई में समर्पित है। इस अवसर पर पार्षद सीमा गुप्ता, समाज सेवी भोलानाथ विज, आर्य समाज की प्रधाना पुष्पा बिज, गिरधारी लाल नासवा, सचिव मनोज खत्री, प्रो कर्ण सिंह वर्मा, मीडिया प्रभारी राजेन्द्र दुर्गा, अविनाश चुघ, योगेन्द्र वधवा जी उपस्थित थे।

- मनमोहन सिंह

श्रमिक स्त्री-पुरुषों को खाद्यान्न वितरित

आर्य समाज व पतञ्जलि योग समिति कोटा के संयुक्त तत्त्वावधान में इन्द्रप्रस्थ औद्योगिक क्षेत्र पर कार्यरत श्रमिक महिलाओं-पुरुषों को बिस्कुट-खाद्यान्न के पैकेट वितरित किये गये। इस अवसर पर आर्य समाज के जिला प्रधान श्री अर्जुन देव चढ्डा व आर्य समाज रामपुरा के प्रधान श्री कैलाश बाहेती ने श्रमिकों को स्वच्छ रहने व स्वच्छता रखने का संदेश दिया।

भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी श्री विवेक गर्ग ने बताया कि पतञ्जलि योग समिति द्वारा पिछले दो सप्ताह से अलग-अलग क्षेत्रों में खाद्यान्न के पैकेट वितरित किये जा रहे हैं।

-अर्जुन देव चढ्डा, प्रधान

जहांगीरपुरी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि क्रय एवं लघु भवन निर्माण हेतु सहयोग की अपील

आपको जानकर अत्यन्त हर्ष होगा कि दिल्ली के जहांगीरपुरी क्षेत्र में आर्यसमाज मन्दिर के भवन निर्माण के लिए भूमि क्रय कर ली गई है जिसके मूल्य भुगतान के लिए 90 दिन का समय लिया गया है। भुगतान की अन्तिम तिथि 24 जुलाई, 2017 निर्धारित की गई है।

विदित हो कि दिल्ली के झुग्गी-झोपड़ी कालोनी - जहांगीरपुर में आर्य समाज की गतिविधियां विगत 40 वर्षों से संचालित की जा रही थीं किन्तु मन्दिर निर्माण के लिए भूमि खरीदी नहीं जा सकी थी। अब आर्यसमाज एवं सभा के सहयोग से भूमि खरीद ली गई है और इस पर लघु मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ किया जाना है।

इस हेतु समस्त आर्यसमाजों, दानी महानुभावों, सहयोगी संस्थानों, संगठनों से सहयोग सादर अपेक्षित है। आपसे निवेदन है कि अधिक से अधिक धनराशि का सहयोग नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से प्रदान करके पुण्य के भागी बनें।

कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक/बैंक ड्राफ्ट **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम बनवाकर सभा कार्यालय - **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1** के पते पर भिजवाने की कृपा करें। आप चाहें तो अपनी दानराशि सीधे सभा के निम्न बैंक खाते में जमा कर सकते हैं।

कृपया राशि जमा करते ही श्री मनोज नेगी जी 9540040388 को सूचित करें तथा अपनी जमा पर्ची aryasabha@yahoo.com पर ईमेल कर दें ताकि रसीद भेजी जा सके।

भारतीय स्टेट बैंक
खाता सं. 33723192049
IFSC : SBIN0001639

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य (प्रधान) **विनय आर्य** (महामन्त्री)

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्त्वावधान में

राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर : 28 मई से 5 जून

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल, रिवाड़ी महाविद्यालय, गांव जसात, तहसील पटौदी, गुरुग्राम (हरियाणा)

अधिक जानकारी हेतु श्रीमती अंजू बजाज, सह संचालिका (9810563979)/ श्रीमती आरती खुराना (9910234595) से सम्पर्क करें। *-मृदुला चौहान, संचालिका*

आर्य वीर दल दिल्ली प्रदेश का

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर : 1 से 11 जून

डी.ए.वी. स्कूल, राजेन्द्र नगर, साहिबाबाद, गाजियाबाद (उ.प्र.)

अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें- *बृहस्पति आर्य, महामन्त्री, 9990232164*

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

5 जून से 20 जून 2017

सार्वदेशिक आर्यवीर का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर गुरुकुल पौन्धा देहरादून (उत्तराखण्ड) में 5 से 20 जून 2017 को स्वामी देवव्रत सरस्वती, प्रधान संचालक की अध्यक्षता में आयोजित किया जा रहा है। अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

आचार्य धनञ्जय, शिविर संयोजक (9411106104)

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश का

व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर : समापन समारोह

28 मई, 2017 सायं 4 बजे : डी.ए.वी. स्कूल, श्रेष्ठ विहार, दिल्ली-92

समस्त आर्यसमाजों एवं आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर आर्य वीरांगनाओं को अपना आशीर्वाद प्रदान करें।

- श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका, 9971447372

प्रचारक/शिक्षक चाहिए

सार्वदेशिक आर्य वीर दल को सम्पूर्ण भारत में वैदिक धर्म का प्रचार एवं आर्य वीरों प्रशिक्षण के लिए प्रचारक/शिक्षक की आवश्यकता है। इच्छुक आर्यवीर गुरुकुल पौंधा, देहरादून में 5 से 20 जून तक आयोजित सार्वदेशिक आर्य वीर दल के राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर में उपस्थित हों। चयनित उम्मीदवारों को उचित मानदेय एवं आवासादि की सुविधा प्रदान की जाएगी। सम्पर्क करें -

डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती,
प्रधान सेनापति , सा.आर्य वीर दल
(मो. 9868620631)

सेवक चाहिए

आर्यसमाज प्रशान्त विहार ए ब्लाक, दिल्ली को एक सेवक की आवश्यकता है। उचित वेतन एवं आवास व्यवस्था प्रदान की जाएगी। इच्छुक सेवाभावी महानुभाव सम्पर्क करें।

-सोहनलाल मुखी, मन्त्री
मो. 9811849523

सेवक चाहिए

आर्यसमाज सागरपुर नई दिल्ली को एक सेवक की आवश्यकता है। इच्छुक महानुभाव सम्पर्क करें।

-सुखबीर सिंह आर्य, प्रधान
9350502175

कैदियों को बांटे सत्यार्थ प्रकाश

आर्यसमाज सैक्टर 32 डी चंडीगढ का वार्षिक कार्यक्रम 10 से 14 मई 2017 के अवसर पर आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने आर्यसमाज के पदाधिकारियों के साथ हरियाणा के राज्यपाल डॉ. कप्तान सिंह सोलंकी जी से मुलाकात करके व सत्यार्थ प्रकाश व कुछ साहित्य भेंट किया।

12 मई को चंडीगढ की मॉडल जेल में डिप्टी सुपरिंटेंडेंट श्री अमनदीप जी व वेलफेयर ऑफीसर श्री प्रवीण कुमार जी सहित अनेकों महानुभाव व सैकड़ों कैदियों को सत्यार्थ प्रकाश व वैदिक साहित्य भेंट किया गया। डॉ. वीरेन्द्र अलंकार जी के व्याख्यान हुए। उन्होंने अंध विश्वासों से बचने के अनेक उपाय बताये।

-हरिकिशोर आर्य, मंत्री

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है।-सम्पादक

आर्य सन्देश के वार्षिक सदस्यों की सेवा में

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मुखपत्र **साप्ताहिक "आर्यसन्देश"** के समस्त वार्षिक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें जिससे उन्हें नियमित रूप से आर्यसन्देश भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हों उनसे निवेदन है कि वे अपना आजीवन (10 वर्षीय) शुल्क भेजें। कृपया इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। सभी सदस्यों को पत्र द्वारा सूचना भी भेजी जा रही है।

वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा **आजीवन शुल्क** (दस वर्षों हेतु) **1000/- रुपये** है। पत्र व्यवहार के लिए कृपया अपना नाम, सदस्य संख्या, पिनकोड तथा मो. नं. अवश्य लिखें।

- सम्पादक

निर्वाचन समाचार

आर्य समाज मगरा पूंजला जोधपुर (राजस्थान)

प्रधान - श्री सम्पतराज देवड़ा
मंत्री - श्री महेश गहलोत
कोषाध्यक्ष - श्री हंसराज गहलोत

आर्य समाज विज्ञान नगर कोटा (राजस्थान)

प्रधान - श्री अर्जुनदेव चढ्डा
मंत्री - श्री सुनील दुबे
कोषाध्यक्ष - श्री महेन्द्र पाल शर्मा

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 22 मई, 2017 से रविवार 28 मई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 25/26 मई, 2017

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 24 मई, 2017

श्री तेजपाल सिंह धामा संस्कृति मनीषी सम्मान से सम्मानित

भारतीय संस्कृति, मानवीय मूल्यों, महापुरुषों के जीवन, भारत के गौरवशाली इतिहास और प्राचीन विज्ञान आदि से संबंधित आजीवन समग्र लेखन के लिए दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड, संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार द्वारा दिया जाने वाला प्रतिष्ठित संस्कृति मनीषी सम्मान प्रख्यात इतिहासकार तेजपाल सिंह धामा को प्रदान किया गया। इस सम्मान में डेढ लाख रुपए की नगद सम्मान धनराशि, शॉल एवं सम्मान पत्र प्रदान किया गया। इस अवसर पर श्री रविन्द्र चंद्र गुप्ता को मरणोपरांत महर्षि दधिचि सम्मान प्रदान किया गया। सम्मान उनकी सुपुत्री ने ग्रहण किया। संस्कृति मंत्री महेश शर्मा ने इस अवसर पर कहा कि संस्कृति की रक्षा पुस्तकों से ही संभव है। ऋग्वेद से लेकर आज तक जितनी भी पुस्तकें लिखी गई, उन सबके कारण ही हमारी सभ्यता एवं संस्कृति सुरक्षित रही है।'' समारोह की अध्यक्षता उदयपुर विवि राजस्थान के कला संकाय के पूर्व अध्यक्ष एवं प्रख्यात शिक्षाविद प्रो. रामगोपाल शर्मा ने की। लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ के कुलपति प्रो. रमेश कुमार पांडे विशिष्ट अतिथि रहे। दिल्ली लाइब्रेरी बोर्ड के चेयरमैन रामकृष्ण गौड ने तेजपाल सिंह धामा एवं तीन अन्य साहित्यकारों के जीवन एवं रचनाओं पर प्रकाश डाला। बहुचर्चित फिल्म पदमावती भी तेजपाल सिंह धामा के शोधग्रंथ अग्नि की लपटें पर आधारित है।

"हिन्द की चादर, गुरु तेग बहादुर" का लोकार्पण

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल एवं राष्ट्रीय सिख संगत के संयुक्त तत्त्वावधान में 6 मई 2017 को कान्स्टीट्शन क्लब स्पीकर हॉल में ''हिन्द की चादर, गुरु तेग बहादुर'' विजय गुप्त द्वारा लिखित खण्ड काव्य का भव्य लोकार्पण समारोह आयोजित हुआ। अध्यक्षता आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के प्रधान एवं एम.डी.एच. के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी तथा स. चिरंजीव सिंह जी ने की। यह पुस्तक सभ्या प्रकाशन द्वारा प्रकाशित की गई है।

– चतरसिंह नागर, महामंत्री

प्रतिष्ठा में,

क्षेत्रीय गोष्ठियों का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दोपहर 3 से सायं 7:15 बजे तक दिल्ली की आर्यसमाजों की क्षेत्रवार गोष्ठियों का आयोजन किया गया है। आपसे निवेदन है कि आप अपनी आर्यसमाज के सभी महत्त्वपूर्ण अधिकारियों तथा सक्रिय महिला पदाधिकारियों को भी साथ लाएं ताकि चर्चाएं तथा सूचनाएं समस्त आर्यजनता तक सरलता से पहुँचाई जा सके और गोष्ठी के उद्देश्यों को पूर्ण किया जा सके। आपसे यह भी निवेदन है कि यदि आप किसी कारणवश अपने क्षेत्र की गोष्ठी में न पहुंच पाएं, तो अन्य क्षेत्र की गोष्ठी में अवश्य ही पहुंचने का प्रयास करें। तिथियों में परिवर्तन सम्भव है। शेष स्थान बाद में सूचित किए जाएंगे। गोष्ठी के उपरान्त समस्त उपस्थित महानुभावों के लिए सुन्दर प्रीतिभोज की व्यवस्था आर्यसमाज की ओर से की जाएगी।

पश्चिम दिल्ली-1

आर्यसमाज डी ब्लाक विकासपुरी

रविवार : 25 जून, 2017

पश्चिम दिल्ली-2

आर्यसमाज कीर्ति नगर

रविवार : 2 जुलाई, 2017

उत्तरी दिल्ली

आर्यसमाज बिड़ला लाइन्स, कमला नगर

रविवार : 9 जुलाई, 2017

पूर्वी दिल्ली

आर्यसमाज सूरजमल विहार

रविवार : 16 जुलाई, 2017

दक्षिण दिल्ली

आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश, पार्ट-2

रविवार : 23 जुलाई, 2017

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह